



आदर्श दंपति
नकुलपिता एवं नकुलमाता



विपश्यना विशोधन विन्यास

**आदर्श दंपति
नकुलपिता एवं नकुलमाता**



**विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी**

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं उपासकानं
विस्सासकानं यदिदं नकुलपिता गहपति।”
“भिक्षुओ, मेरे उपासक श्रावकों में ये अग्र हैं –
विश्वस्त रूप से बातचीत करने वालों में अग्र
नकुलपिता गृहपति।”

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम साविकानं उपासिकानं
विस्सासिकानं यदिदं नकुलमाता गहपतानी।”
“भिक्षुओ, मेरी उपासिका श्राविकाओं में ये अग्र हैं –
विश्वस्त रूप से बातचीत करने वालियों में अग्र
नकुलमाता गृहपत्नी।”

-अङ्कुरनिकाय (१.१.२५७, २६६)

नकुलपिता एवं नकुलमाता

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय

[vii]

नकुलपिता एवं नकुलमाता	१
वर्तमान कथा	१
प्राणियों का साहचर्य	१
आदर्श भार्या – नकुलमाता गृहपत्नी	३
चित्त व्याकुल न होय!.	६
निर्वाण की प्राप्ति	८
अतीत कथा	१०
<i>परिशिष्ट - सुखी गृहस्थ.</i>	११
विपश्यना साहित्य	१५
विपश्यना साधना के केंद्र	१८

प्रकाशकीय

नकुलमाता और नकुलपिता दोनों श्रेष्ठी कुलों में जन्मे और सुखी गृहस्थ दंपति का जीवन जी रहे थे। उनका एक नकुल नाम का पुत्र था। इसलिए वे इन्हीं नामों से जाने जाते थे। वे दोनों पिछले ५०० जन्मों में भगवान के माता-पिता रहे। भगवान से पहली बार मिलते ही पूर्वजन्मों के अभ्यास के कारण भावुक होकर भगवान को 'आओ पुत्र! आओ पुत्र!' कह उठे। वे दोनों भगवान के प्रमुख श्रावकों में हुए।

दोनों का विवाह कम उम्र में हो गया था। नकुलपिता ने भगवान से कहा, जीवनभर मैंने नकुलमाता को छोड़, किसी अन्य नारी का मन में भी चिंतन नहीं किया, शारीरिक संबंध होना तो बहुत दूर की बात है। नकुलमाता ने भी कहा कि आजीवन किसी परपुरुष को मैंने मन में भी स्थान नहीं दिया, शरीर का संबंध होना तो बहुत दूर की बात है। दोनों का जीवन 'कामेसुमिच्छाचारा वेरमणी', यानी काम-संबंधी मिथ्याचरण (व्यभिचार) से विरत रहना था। फिर भगवान के संपर्क में आने पर कल्याणी विपश्यना विद्या द्वारा काम-वासना के विकारों का जड़ से उन्मूलन कर लिया। दोनों पति-पत्नी 'अब्रह्मचरिया वेरमणी', यानी अब्रह्मचर्य से विरत रहते हुए, अखंड ब्रह्मचर्य का जीवन जीने लगे।

एक बार नकुलपिता बहुत बीमार हुआ और भगवान के दर्शनों के लिए उनके पास गया। भगवान ने कहा, "नकुलपिता तुम्हारा शरीर भले अस्वस्थ हो, पर मन स्वस्थ रहना चाहिए।" नकुलपिता ने कहा, "ऐसा ही है, भगवान।"

नकुलपिता को बहुत बीमार देखकर नकुलमाता ने उसे आश्वासन देते हुए कहा, "आप रंचमात्र भी चिंता मत कीजिए। चिंता के साथ प्राणों का त्याग न करें। चिंता के साथ प्राणों का परित्याग दुःखद होता है। भगवान ने भी चिंता के साथ प्राणों के परित्याग की निंदा की है।"

XIII / नकुलपिता एवं नकुलमाता

नकुलमाता ने परिवार के पालन-पोषण के लिए अपनी कार्य-दक्षता, त्रिरत्न के प्रति अटूट श्रद्धा और अपने शील की अखंडता के बारे में अपने पति को आश्वस्त किया।

स्वस्थ होने पर नकुलपिता भगवान के पास गया, तब भगवान ने नकुलमाता की प्रशंसा करते हुए कहा, “हे गृहपति, तुझे बड़ा लाभ है। तू बड़ा भाग्यवान है जो तुझे नकुलमाता जैसी गृहपत्नी मिली है, जो तुझ पर अनुकंपा करने वाली है, जो तेरी हितचिंतक है, तुझे सात्वना और सदुपदेश देने वाली है।”

इस अवसर पर भगवान ने आदर्श दांपत्य जीवन पर एक सदुपदेश दिया, “जो पति-पत्नी दोनों उदार होते हैं, संयत होते हैं, धर्मानुसार जीवन जीते हैं, परस्पर प्रिय बोलने वाले होते हैं, उन्हें आसानी से प्रचुर अर्थ की प्राप्ति होती है। दोनों सदाचारियों के दुश्मन दुःखी होते हैं। इस लोक में धर्म का पालन करके वे दोनों समानशीली तथा समानव्रती होकर साथ-साथ आनंदित होते हैं और देवलोक में भी एक-साथ आनंदित होते हैं।”

भगवान ने जिन गृहस्थ श्रावकों को अग्र की उपाधि दी, उनमें ये दो भी थे। नकुलमाता और नकुलपिता को विश्वसनीय शीलवंतों में अग्र की उपाधि मिली।

विपश्यना विशोधन विन्यास